अंतरिक्ष में यात्रा

लेखकः सैय्यद मुर्तज़ा मुजतहेदी सीसतानी

अनुवादकः ज़ैन अलवी जौनपूरी

WWW.ALMONJI.COM

Email: info@almonji.com

किताब का नामः अंतरिक्ष में यात्रा
लेखकः सैय्यद मुर्तज़ा मुजतहेदी सीसतानी
अनुवादकः ज़ैन अलवी जौनपूरी
नज़रे सानीः फ़िज़्ज़ा सिद्दीक़ा अज़हरी
कम्पोज़िंगः इफ़्फ़त फ़ातिमा अज़हरी

अंतरिक्ष में यात्रा

ज़हूर के तरक़्क़ी और उन्नति से भरे हुए ज़माने में अंतरिक्ष में यात्रा यह एक बहुत ही दिलचस्प विषय है।

क़ुर्आन और हदीसे अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम में अंतरिक्ष की यात्रा के बारे में बहुत ही दिलचस्प नुक्ते पाए जाते हैं। ज़हूर के ज़माने में अंतरिक्ष में यात्रा करने के बारे में बयान करने से पहले तारों, कहकशाओं, ग्रहों और बादलों के बारे में बयान करना ज़रूरी है। ताकि हम सब अंतरिक्ष

में यात्रा की महानता को पहचान सकें और पहचान सकें कि ज़हूर के बा बरकत ज़माने में अंतरिक्ष की यात्रा बहुत ही आश्चर्यजनक होगी।

यह जान लेना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि आज यूरोप और अमेरिका, अंतरिक्ष के बारे में जो कुछ भी बयान करते हैं वह ऐसा ही है कि जैसे उन्होंने अंतरिक्ष को अभी तक समझा ही नहीं है और उसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं।

आज जितने भी मुल्क चाँद पर ज़मीन खरीदने और बेचने (प्लॉटिंग) की बात करते हैं वह सब एक अफ़साना है और यह सिर्फ़ इसलिए है कि वह दुनिया वालों पर अपनी तरक़्क़ी और उन्नति को साबित करना चाहते हैं जबकि हक़ीक़त यह है कि वे मुल्क सिर्फ़ लोगों के सोच-विचार पर हावी होना चाहते हैं और लोगों में अपना डर और भय बैठाना चाहते हैं। और वे लोग भी इस बात को जानते हैं अब हम आप से एक सवाल करते हैं कि क्या चाँद पर पहुँच जाना (अगर इस घटना को सही मान लें तब) संसार के सारे रहस्य को जान लेना है ?

धरती

हम ने जो कुछ भी बयान कि उससे यह सम्भव है कि किसी पढ़ने वाले के लिए यह बात एक आश्चर्य का कारण हो अतः हम इस बात को विस्तार से बयान करेंगे।

गैबत के ज़माने में इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के जल्वे इतने ज़्यादा हैं कि बड़े-बड़े मुल्क कि जो इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ को

नहीं मानते और उनकी ग़ैलत को स्वीकार नहीं करते वे भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि हमारे पीछे कोई तो शक्ति है कि जो हमारी सहायता करती है। कोई तो है जिसको हम जानते नहीं पहचानते नहीं मगर वह क़दम-क़दम पर हमारे साथ हैं और हमारी सहायता करता है। अब इस बात पर ध्यान दें।(१)

दुनिया, और धरती के बारे में खोज करने वाले भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह धरती किसी एक शक्ति की क्षत्रछाया में है और इसका एक सिस्टम है जिसको कोई ना कोई चला रहा है। वह ऐसी शक्ति है जिसको हम आज तक जान नहीं सके हैं। और यह दुनिया उसी की क्षत्रछाया में है। और बहुत से वैज्ञानिको ने इस बात को अपने निबंध में बयान किया है। (२)

(जिसको हम यहाँ बयान नहीं करेंगे।)

यह भी जान लेना ज़रूरी है कि बड़े-बड़े मुल्क इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि, ना सिर्फ़ यह कि इल्म की उन्नति के लिए बल्कि तारो, कहकशाओं और अंतरिक्ष तक पहुँचने के लिए एक ऐसी भी शक्ति की आवश्यकता है कि जो इस माद्दी दुनिया (भौतिकी संसार) से कहीं ज़्यादा हो, और जब यह सूरते हाल पैदा हो जाएगी तब अंतरिक्ष में पहुँचना सम्भव होगा। और फिर उसी तरह इल्म में भी उन्नति होगी। इन सारी बातों को लेकर दुनिया वालों ने बहुत प्रयास किया मगर चूंकि वह उन लोगों से सहायता मांगते थे जो इल्म के दर से दूर थे इस लिए उनको निराशा से दोचार होना पड़ा। जिन लोगों को यह (यानी

अंतरिक्ष के रहस्य के बारे में पता लगाना।) काम आनइस्टाइन और डा० जोसेफ़ ने सौंपा था वह या तो पागल हो गए या फिर मर गए। और बाद में आईंस्टीन ने इस काम से हाथ खींच लिया और डा० जोसेफ़ खुफ़िया तौर से किसी के हाथों मारा गया। ज़हूर के ज़माने में अंतरिक्ष तक पहुँचने के लिए अंतरिक्ष और संसार की उसअत पर एक नज़र डालते हैं।

कहकशाँ (Galaxy)

ज़मीन एक ग्रह है कि दूसरे ग्रहों की तरह सूरज के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती है। उसका आकार १२७५० किमि है, और वह सूरज से १५० मिलियन किमि दूर है। और अब तक ९ ग्रहों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सकी है। सूरज और बाक़ी सारे ग्रह मिलकर सोलर सिस्टम बनाते हैं। सारे ग्रह सूरज के सिस्टम में ही चलते है और अपने-अपने सेंटर पर घूमते रहते हैं। सारे ग्रह सूरज से ही रौशनी और गर्मी प्राप्त करते हैं । सूरज ज़मीन से एक मिलियन बड़ा है। सूरज, कहकशाँ का एक छोटा सा भाग है कि जो ८०० हज़ार किमि प्रति घंटा की रफ़्तार से २३० मिलियन वर्ष में एक बार इस कहकशाँ के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता है। कहकशाँ कई अरब तारों से मिलकर बनती है जिसमें से एक सूरज है, कि जो पीला तारा है। (३)

यह कहकशाँ करोड़ों और अरबों के मोकाबले में एक छोटे से बादल की तरह है। और यह कहकशाँ वैसी ही हैं जैसे कि समुंदर के किनारे बिखरी हुई रेत के कण।(४)

सौ बिलियन पुच्छल तारा

सोलर सिस्टम के इर्द-गिर्द सौ बिलियन पुच्छल तारा पाया जाता है। जिसकी खोज करने वाले " यॉनआवर्ट " थे और उसको उन्हीं का नाम भी दिया गया। और तारों का यह झुर्मुट हमारी धरती से बहुत दूर है। और सूरज से इसकी दूरी तीन टरेलियन किमि है। (५)

२५० बिलियन सूरज

कहकशाँ के सिस्टम में २५० बिलियन सूरज पाए जाते हैं। अगर उस तक पहुँचना चाहें तो एक बिलयन किमि प्रति घंटा की रफ़्तार से चलना होगा तब कहीं जाकर हम एक लाख साल में उस तक पहुँच सकते हैं। (६)

खरबों कहकशाँए (Galaxy)

सौर मण्डल में खरबों में कहकशाँ फैली हुई हैं। और एक कहकशाँ का आकार एक वर्ष नूरी के बराबर है कि जिसमें सौ खरब से ज़्यादा तारे पाए जाते हैं। सौर मण्डल इतना वसीय (विस्तृत) है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इसका अंदाज़ा इसी तरह लगाया जा सकता है कि अब तक जितनी भी जानकारी हासिल हुई है वह समुंदर में क़तरे के बराबर है। (७)

दुनिया में संस्कृति

डा० सबली का कहना है कि इस संसार में कम से कम सौ बिलियन ग्रह पाए जाते हैं। और उनपर जीवन भी पाया जाता है जो कि हो सकता है कि हम से कई गुना तरक़्क़ी याफ़्ता हों। इनके अलावा कुछ दूसरे वैज्ञानिकों ने जैसे, डा० इन्तेज़ास्ट्रो, कारल सागान, फ़रेंक नें १९६१ ई० में आपस में मुलाक़ात की और उस मुलाक़ात के बाद एक

दिल दहला देने वाली बात का ऐलान किया कि इस सौर मण्डल में चालीस से पचास मिलयन ग्रह पाए जाते हैं कि जहाँ के रहने वाले हम से सम्पर्क करने का प्रयास कर रहे हैं। फ़्रॉन्स के एक वैज्ञानिक ने (जो पहले अमेरिका में अंतरिक्ष के बारे में खोज करने वाली एक कमेटी में था।) ने तीन बार रेडियो पर संदेश सुना था जिसके बारे में यह कहा जाता है कि वे संदेश उन लोगों के हो सकते हैं कि जो दूसरे ग्रहों पर पाए जाते हैं। ऐसा लगता है कि दूसरी दुनिया के लोग भी एक दूसरे से सम्पर्क करने का प्रयास कर रहे हैं। (८)

अब तक इसी तरह से ११३ संदेश दूसरी दुनिया के प्राप्त हो चुके हैं। और इस बात में किसी भी तरह का कोई शक नहीं है कि दूसरी दुनिया के लोग भी एक दूसरे से संपर्क करने का प्रयास कर रहे हैं। मगर अभी तक यह पता नहीं चल सका है कि उस संदेश में क्या कहा गया है क्योंकि उनकी भाषा समझ में नहीं आ सकी है। और यह भी सम्भव है कि वैज्ञानिक और मुल्क की सरकार इस बात को जानती हों मगर उस पर से पर्दा उठाना नहीं चाहती हों। (९)

कहकशाओं (Galaxies) पर जीवन

इस बात में कोई शक नहीं है कि कहकशाओं में भी जीवन है और उनकी अपनी एक खास संस्कृति भी होगी। जब ११ वैज्ञानिकों नें १९६१ ई० में ग्रीन बंक नामी जगह पर एक कॉन्फ़्रेंस के बाद यह ऐलान किया कि पचास मिलियन कहकशाएँ हैं तो फिर यह बात भी साफ़ है कि

उनपर जीवन भी है तो उनका भी एक खास तरीक़ा होगा अपना जीवन बिताने का। और नासा के एक सांईटिस्ट ने भी इस बात की ताइद की है। (१०)

इस ज़माने में अंतरिक्ष की यात्रा

इस संसार और सौर मण्डल के पता लगाने से और चाँद और सूरज को जान लेने से, क्या हम कह सकते हैं कि हमने उनके बारे में सारी जानकारी प्राप्त कर ली है ?

दुनिया के ज़ालिम व जाबिर मुल्क अपनी हुकूमतों को बचाने और अपनी ताक़त दुनिया वालों पर उजागर करने के लिए लोगों को इस तरह से डराते हैं, और यह साबित करना चाहते हैं कि उनका कब्ज़ा सिर्फ़ इसी दुनिया तक ही नहीं बल्कि उनकी पहुँच अंतरिक्ष तक है। और लोगों को अपनी तरफ़ आकर्षित करने के लिए अपने अंतरिक्ष की यात्रा को ऐसे बयान करेंगे जैसे उन्हों ने कोई जग जीत लिया हो। जबकि वह हक़ीक़त से कोसों दूर होता है।

हालाँकि वह वे यह भी जानते हैं कि सितारों और अंतरिक्ष में पहुँचने के लिए ऐसी शक्ति की अवश्यकता है कि जो इस दुनिया की क़ैद से आज़ाद हो और नूर की रफ़्तार से भी ज़्यादा तेज़ हो। और वे लोग यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि जब पूरी दुनिया पर इल्म का राज्य होगा और इंसान अपनी अक़ल के तकामुल (बुद्धी पूर्णता) तक पहुँच जाएगा तो आज की इस तरक़्क़ी को देख कर हँसेगा। दिलचस्प बात तो यह है कि अब ना सिर्फ़ दुनिया की ज़ालिम व जाबिर हुकूमतें इस बात को

जानती हैं बल्कि वह लोगों को भी उससे आगाह करा रहे है। इससे यह बात अच्छी तरह वाज़ेह हो जाएगी।

आज अंतरिक्ष में यात्रा करना बहुत महँगा है। अमेरिका का अंतरिक्ष शटल और रूस का अंतरिक्ष में स्टेशन बहुत ही महँगा है। क्योंकि अंतरिक्ष में जाते समय वहाँ जिस-जिस चीज़ की भी आवश्यकता पड़ सकती है, ज़मीन से वह सारी चीज़ें अपने साथ लेकर जाना पड़ता है। अब अंदाज़ा लगाए कि एक किलो चीज़ को ज़मीन से ले जाने में दस हज़ार डॉलर का खर्चा है। मिसाल के तौर १९९३ ई० में एक ऐसा टेली स्कोप जिस की सहायता से अंतरिभ में देखा जा सकता है उसको बनाने का खर्चा सौ मिलयन डॉलर था। यह एक छोटी सी मिसाल है। (११)

यह बात साफ़ है कि अंतरिक्ष में जाने के लिए कितने ख़र्चे की ज़रूरत है। अब अंतरिक्ष में जाने के लिए होने वाले खर्चे के बारे में दो और बातों पर ध्यान दें, उसके बाद एक नुक्ते को बयान करेगें।

अमेरिकी राज्य नें " आपोलिओ " को चाँद पर पहुँचाने के लिए पाँच मिलयन से ज़्यादा ख़र्चा किया। यह ख़र्च इतने ज़्यादा हैं कि जिनको देख कर इंसान हैरान हो जाता है।

आपोलिओ की यात्रा का ख़र्चा १९९१ ई० में खलीज़े फ़ारस की जंग से ज़्यादा था। क्योंकि उस समय चाँद पर पहुँचने के लिए इससे कम ख़र्च सम्भव नहीं था। सब को इस यात्रा से आशा थी कि कोई ना कोई नतीजा निकलेगा। मैंने खुद भी यह ख़बर सुन कर बहुत सारे निबंध टेलीग्राफ़

के माध्यम से प्राकाशित किए और चाँद पर स्टेशन इजाद होने के बारे में लिखता रहा यहाँ तक कि चाँद पर होटल का सुनकर मैंने भी दो लोगों का एक कमरा बुक किया था।

मगर यह जल्द बाज़ी का नतीजा था कि चाँद पर पहुँचने वालों ने वहाँ क्या किया उसका भी पता नहीं चल सका। और चाँद से वापस आने के बाद उन लोगों ने वहाँ क्या खोज की इस बात का भी पता नहीं चला। मैंने पहले भी कहा था कि चाँद पर जाने का ख़र्चा कई सौ मिलयन डॉलर है। (१२)

आज के ज़माने में अंतरिक्ष में जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं

अब तक हम ने अंतरिक्ष में यात्रा के ख़र्च के बारे में जो कुछ बयान किया उससे मालूम होता है कि वे लोग जो इस यात्रा पर गए और जिन्हों ने भेजा वे लोग खुद भी इस बात को जातने हैं कि इल्मी उन्नति हर तरफ़ होगी तो आने वाले पीढ़ी उन पर हँसे गी।

अब इस बात की तरफ़ ध्यान दें।

इस ज़माने में चाँद तक पहुँचने के लिए (ना कि कहकशाओं और सितारों तक पहुँचने के लिए) ख़र्च बहुत ही ज़्यादा है। और दूसरी बात यह है कि आज अंतरिक्ष में यात्रा करना ख़तरनाक भी है। मगर अमेरिका और उस जैसे दूसरे राज्य सिर्फ़ और सिर्फ लोगों पर अपनी बड़ाई जताने के लिए और उनपर अपना रोब झाड़ने के लिए हजारों लोगों की ज़िंदगियों से खेल रहे है। अंतरिक्ष में

अंजाम दिए जाने वाले काम ख़ुद भी इस बात के गवाह हैं मगर उस से लोगों को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है। और वे लोग अपना राज्य बनाने और बचाने के लिए तजरबा करते जा रहे हैं।

इस बात को और विस्तार से जानने के लिए इस मतलब पर ध्यान दें।

नासा ने १९९७ ई० में, कासनी नामी शटल को जो कि ३२ किलो ग्राम प्लेटिनियम थी, को अंतरिक्ष में भेजा। इस यात्रा में ख़तरा है, नासा ने इस बात की भी शंका जताई थी। अगर यह कासनी फट जाती तो दुनिया में रहने वाले पाँच अरब लोग उसकी रेज़ से प्रभावित होते और बीमारी के फैलने का भी खतरा था। जिसमें सबसे हानिकारक बीमारी कैंसर भी हो सकती है। यहाँ तक कि अगर कोई उस प्लेटिनियम को सूंघ ले तो कैंसर जैसी बीमारी में मुब्तेला हो सकता है।

बरूस गागून कहता है कि ऐसे कामों में अंतरिक्ष में जो तजरबा किया जाता है अगर वह नाकाम हो जाएँ तो उससे बहुत बड़ी तबाही हो सकती है।(१३) अब सवाल यह है कि अगर इन कामों को अंजाम देने में इतना ख़तरा है तो फ़िर ऐसे कामों का अंजाम देना समाज की ख़िदमत है या ख़यानत ?

यह बहुत बड़ा ख़तरा है। और अगर इत्तेफ़ाक़ से यह तरजरबा सफ़ल भी हो जाए तो हम कहकशाँ में मुश्किल से दस या बारह सितारों तक ही पहुँच सकते हैं। तो ऐसे

कामों के लिए दुनिया और समाज को बली पर क्यों चढ़ाएँ जिस में ख़तरा है ?

अंतरिक्ष यात्रा की सम्भावना

संसार, अंतरिक्ष, और सौर मण्डल बहुत फैला हुआ है जिनका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं। और इन सब में ग़ौर करने से पता चलता है कि अंतरिक्ष में यात्रा की सम्भावना है। आगरचे वह हमारी धरती से बहुत दूर हैं।

इल्म में इतनी उन्नति होने के बाद भी क्या हम पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि आज हम ने जिस इंसान को इस शकल में देखा वह ऐसा ही था ?

इस लिए यह भी नहीं कह सकते की अंतरिक्ष में कहाँ तक यात्रा करना सम्भव है मगर बात तो साफ़ है कि दुनिया के सारे वैज्ञानिक इस बात की खोज में लगे हुए हैं कि जिससे वह अंतरिक्ष में यात्रा करने कि मुश्किल को हल कर सकें।

अंतरिक्ष में अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की यात्रा

जब लोग बलतमीयूस की बातों पर विश्वास करते थे कि आसमानों में यात्रा करना आसम्भव है, उस समय अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने बारहा अंतरिक्ष में यात्रा की है। हज़रत अली अलैहिस्सलाम, हज़रत इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम, और दूसरे इमामों के अंतरिक्ष में यात्रा की घटनाएँ रेवायात में बयान हुई हैं। रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की मेराज भी अंतरिक्ष में एक यात्रा ही थी। और

रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की मेराज पर हम सब का अक़ीदा है। और उस समय लोगों को भी इस घटना का पता चला कि जब दुनिया पर बलतमीयूस की बातें छायी हुई थीं कि अंतरिक्ष में यात्रा करना असम्भव है। उस ज़माने में मौजूदा जेहालत पर ग़ौर करें तो मालूम होगा कि उस ज़माने में ऐसे बहुत से रहस्य को छिपा कर रखा गया। और अगर अहलेबैत अलैहेमुस्समाल के लिए उनके ज़माने में ऐसी बातों को बताना सम्भव होता तो आज हमारे पास अंतरिक्ष के बारे में और भी बातें होतीं।

मान लें कि अगर किसी को अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की अंतरिक्ष में यात्रा वाली बात में शक हो तो फिर उसको इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ख़ुदा की मशियात हमेशा से यह रही है कि वह अपना जो भी पैग़मबर, नबी, या इमाम भेजे उसको उस ज़माने में तमाम लोगों से अफ़ज़ल और हर लेहाज़ से शक्तिशाली बनाए, चाहे इल्म का मैदान हो, या जंग का। इस बात का मतलब यह है कि जिस ज़माने नें नबी, इमाम या पैग़मबर हो उस ज़माने की तरक़्क़ी के हिसाब से सबसे ज़्यादा जानने वाला हो। अगर ख़ुदा ने अपने आख़री रसूल हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम को तलवार और क़ुर्आन के साथ भेजा तो, अपने आख़री इमाम, इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ को भी दलील और क़ुर्आन के साथ ही भेजेगा। और ऐसी शक्ति देकर

भेजेगा कि जो उस ज़माने में सबसे शक्तिशाली होगा। अब इस रेवायत पर ग़ौर करें।

قال المتوکل لابن السکیت : سل ابن الرضا مسالۃ عوصاء بحضرتی، فسالہ فقال : لم بعث اللہ موسیٰ بالعصا وبعث عیسیٰ بابراء الاکمہ والابرص واحیاء الموتی، وبعث محمدا بالقرآن والسیف ؟ فقال ابوالحسن علیہ السلام : بعث اللہ موسیٰ علیہ السلام بالعصا والید البیضاء فی زمان الغالب علی اھلہ السحر، فاتاھم من ذلک ما قھر بسحرھم وبھرھم، واتیت الحجۃ علیھم۔ وبعث عیسیٰ علیہ السلام بابراء الاکمہ والابرص واحیاء الموتی باذن اللہ تعالیٰ فی زمان الغالب علی اھلہ الطب، فاتاھم من ابراء الاکمہ والابرص واحیاء الموتی باذن اللہ فقھرھم وبھرھم۔ وبعث محمداً صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بالقرآن والسیف فی زمان الغالب علی اھلہ السیف والشعر، فاتاھم من القرآن الزاھر والسیف القاھر ما بھر بہ شعرھم وبھر سیفھم.....

(१४)

मोतावक्किल ने इब्ने सिक्कीत (यह व्यक्ति अपने ज़माने में बहुत पढ़ा लिखा था।) से कहा कि मेरे सामने हज़रत इमाम-ए-हादी अलैहिस्सलाम से एक मुश्किल मसअला पूछो।

इब्ने सिक्कीत ने इमाम-ए-रज़ा अलैहिस्सलाम से कहाः

ख़ुदा ने क्यों जनाबे मूसा अलैहिस्सलाम को असा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अंधों को आँख की रोशनी देने, और सफ़ेद दाग़ के मरीज़ो को अच्छा करने, और मुर्दों को ज़िन्दा करने, और हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम को क़ुर्आन के साथ रसूल बना कर भेजा ?

इमाम-ए-हादी अलैहिस्सलाम ने जवाब में फ़रमायाः

ख़ुदा ने जनाबे मूसा अलैहिस्सलाम को असा और यदे बैज़ा (जनाबे मूसा के हाथ पर एक सफ़ेद अंडा बना हुआ

था जिसको यदे बैज़ा कहते थे।) के साथ भेजा कि जिससे नूर निकलता था। और क्योंकि उस ज़माने के लोग जादू में माहिर थे इस लिए जनाबे मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा ने जादू की शक्ति दी ताकि उस ज़माने के लोगों को उसका जवाब दे सकें और उनके जादू को ख़त्म कर सकें और उन पर विजयी हों।

जनाबे ईसा अलैहिस्सलाम को अंधों को आँखों की रौशनी देने की, सफ़ेद दाग़ के मरीज़ो को अच्छा करने की और मुर्दों को ख़ुदा की आज्ञा से ज़िन्दा करने की शक्ति इस लिए दी क्योंकि उस ज़माने के लोग डाक्टरी में बहुत माहिर थे। इस लिए ख़ुदा ने उनको यह शक्तियाँ दी ताकि वह अपने ज़माने को लोगों से ज़्यादा शक्तिशाली हों और उनको प्राजित कर सकें।

हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम को ख़ुदा ने क़ुर्आन और तलवार के साथ रसूल बना कर भेजा इस लिए कि वह ज़माने के लोग लतवार और शेर (काव्य) में माहिर थे इस लिए उनको क़ुर्आन और तलवार की शक्ति दी ताकि वह अपने ज़माने के लोगों पर विजय प्राप्त कर सकें। और उनसे शक्तिशाली हों।

इस रेवायत पर ध्यान देने से यह पता चलता है कि अगर इस ज़माने में चाँद पर पहुँचने और अंतरिक्ष में यात्रा करने का प्रयास किया जा रहा है तो इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ को भी ख़ुदा ऐसी शक्तियों के साथ भेजेगा कि जिसके सामने इस ज़माने की सारी शक्तियाँ कमज़ोर पड़ जाएँगी।

आसमानो तक पहुँच

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की हुकूमत का बनना, और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ की महान शक्ति का ज़हूर, ना सिर्फ़ दुनिया के तमाम नेक लोगों को अपनी तरफ़ आकर्षित करता है बल्कि उस बा बरकत दिन के बारे में बात करने से भी दिलों में उस दिन को देखने का शौक़ पैदा होता है कि जल्द से जल्द वह बा बरकत ज़माना आ जाए। ज़हूर के बा बरकत ज़माने में एक यह भी है कि ज़हूर के ज़माने में लोग आसमान तक पहुँच जाएँगे और अंतरिक्ष में यात्रा करेंगे और सब ग्रहों पर सैर करेंगे। आसमानो में उड़ना, ग्रहों पर सैर करना और कहकशाओं पर घूमना इंसान की पुरानी इच्छा है।

जैसा कि हम जानते हैं कि हमारी दुनिया और फ़रिश्तों की दुनिया अलग है। मगर ज़हूर के बा बरकत ज़माने में इसांन वहाँ भी आसानी से पहुँच सकेगा और वहाँ की भी सैर कर सकेगा। वह लोग ख़ुश नसीब हैं कि जो ज़हूर के बा बरकत ज़माने को देख सकेंगे और उस ज़माने की नेमतों से लाभ उठा सकेंगे। और उस बा बरकत ज़माने में जीवन गुज़ारेंगे। और इस अंधेरी दुनिया से पुर नूर दुनिया तक पहुँच जाएँगे।

ज़हूर का ज़माना और अंतरिक्ष की यात्रा

मेराज की रात में हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम आसमानों की ऊँचाई तक गए और आसमान पर ख़ुदा से बातें की। ख़ुदा ने हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम

को इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के बारे में, और उनके बा बरकत ज़माने के बारे में ख़बर दी। और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ की क़यामत तक की हुकूमत के बारे में, दुनिया में जो आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे उन सब के बारे में विस्तार से, और दुनिया को ज़ुल्म व सितम से पाक होने के बारे में बताया।

अब इस रेवायत पर ग़ौर करें।

रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने फ़रमायाः

فقلت: یارب ھٰؤلاء اوصیائی بعدی؟
فنودیت یا محمد؛ ھٰؤلاء اولیائی واحبائی واصفیائی، و حججی بعدک علی بریتی، و ھم اوصیائک و خلفاوک وخیر خلقی بعدک و عزتی وجلالی لاظھرن بھم دینی، ولاعلین بھم کلمتی ولاطھرن الارض بآخرھم من اعدائی، وللاملکنہ مشارق الارض و مغاربھا، ولاسخرن لہ الریاح، ولاذللن لہ السحاب الصعاب، ولارقینہ فی الاسباب، ولانصرنہ بجندی، ولامدنہ بملائکتی، حتی یعلن دعوتی، ویجمع الخلق علی توحیدی، ثم لادیمن ملکہ، ولاداولن الایام بین اولیائی الی یوم القیامۃ۔

मैंने कहा ऐ ख़ुदा वे (यानी मेरे अहलेबैत) मेरे बाद मेरे अवसिया (प्रतिनिधी) हैं ?

पस मैंने एक आवाज़ सुनीः ऐ मोहम्मद ! वे मेरे अवसिया, मेरे दोस्त, और मेरे चुने हुए हैं, और आप पर और आप की उम्मत पर मेरी तरफ़ से हुज्जत हैं। और तुम्हारे अवसिया, तुम्हारे जानशीन (प्रतिनिधी), और तुम्हारे बाद मेरी बेहतरीन मख़लूक़ हैं। मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की क़समः यक़ीनन मैं उनकी सहायता से अपने दीन को उजागर करुँगा। और अपने कल्मे को उनके माध्यम से बरतर करुँगा। और उनमें से आख़री की

सहायता से ज़मीन को दुश्मनों से पाक करुँगा। और उसको पूरब और पश्चिम का मालिक बनाऊँगा। हवाओं को और बादलों को उसके क़दमों में झुका दुँगा। अपनी फ़ौज से उसकी सहायता करुँगा। अपने फ़रिश्तों के माध्यम से उसकी मदद करुँगा। ताकि वह मेरे पैग़ाम को आम करे। सब लोगों को एक ख़ुदा की इबादत पर इकट्ठा करे। फिर उसकी हुकूमत को क़यामत तक के लिए पायदार बना दूँगा।(१५)

जैसा कि आपने पढ़ा कि इस रेवायत से कुछ महत्वपूर्ण बातों के बारे में बात-चीत हुई है। इस रेवायत में इमामों कि अज़मत (महानता) उनके माध्यम से दीन को उजागर करना, आख़री इमाम की सहायता से ज़मीन को दुश्मनो से पवित्र करना, ख़ुदा की फ़ौज, हवाओं का इमाम के कदमों में झुका देना, एक ख़ुदा की इबादत करना, और एक ही राज्य क़यामत तक होने को बयान किया गया है।

रेवायत में पाए जाने वाले नोकात

इस रेवायत में ऐसे नुक्ते पाए जाते हैं। जिन से कुछ नतीजे प्राप्त होते हैं।

१. रेवायत का यह जुमला जिसमें ख़ुदा ख़ुदा वन्दे आलम ने फ़रमायाः

لاسخرن له الریاح ولذللن له السحاب الصعاب، ولارقینه فی الاسباب

यह जुमला इस बात की दलील है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का असमानो की तरफ़ जाना जिस्मानी है रूहानी (सिर्फ़ आत्मा) नहीं। जैसे कि रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व

आलेही वसल्लम की मेराज जिस्मानी थी। इसलिए की अगर इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का आसमानों पर जाना रूहानी होता तो फिर असआब, असबाब, और सहाब की ज़रूरत नहीं होती।

२. इस रेवायत से दूसरा प्राप्त होने वाला नुक्ता यह है कि अगर इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ आसमान की तरफ़ जिस्मानी तौर पर भी जाएँगे तब भी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ को उन चीज़ों की आवश्यकता नहीं होगी जो अंतरिक्ष में यात्रा करने के लिए होती है, यहाँ तक कि वह किसी सवारी या बुर्राक़ (हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की एक मख़सूस सवारी जिसको बुर्राक़ कहते हैं) की भी आवश्यकता नहीं होगी। इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ किसी भी चीज़ के मोहताज नहीं है और ना ही वे किसी भी चीज़ पर निर्भर हैं। बल्कि ख़ुदा हर चीज़ को इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के मोसख़्ख़र (यानी हर चीज़ को उनके इरादे का ताबे बना देगा) कर देगा।

३. इस रेवायत से यह भी पता चलता है कि ज़हूर के बा बरकत ज़माने में अंतरिक्ष तक जाने के लिए अनेक वसीले होंगे। इस रेवायत में तीन तरह से बयान किया गया हैः

الف۔ لا سخرن لہ الریاح

हवाओं को उनके इरादे का ताबे बना दिया जाएगा। कुर्आन मजीद में हज़रत सुलैमान और उनके तख़्त (उसको

बिसात कहते थे कि हवा में उड़ता था।) के बारे में बयान किया गया है। हवाऐं उनके तख़्त को आसमान तक ले जाती थी। हवाओं और तूफ़ान का ज़ोर बहुत तेज़ होता है जिसको रोकना आज के वैज्ञानिकों के भी बस में नहीं है लेकिन क़ुर्आन मजीद की आयात के आधार पर जनाबे सुलैमान को ऐसी शक्ति ख़ुदा ने दी थी कि वह उससे हवाओं और तूफ़ानो को भी रोक सकते थे। जब जनाबे सुलैमान को यह शक्ति हासिल थी तो जो फ़ख़रे सुलैमान हैं इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ उनके लिए ख़ुदा हर चीज़ को उनके क़दमों में झुका देगा।

ب۔ولاذللن لہ السحاب الصعاب

ख़ुदा कहता है कि सख़्त बादलों को उनका (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ) का ताबे (आज्ञाकारी) बनाऊँगा। और वह इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के हुक्म के ताबे होंगे।

ج۔ ولا رقینہ فی الاسباب

ख़ुदा कहता है कि उनको (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ) को ऊपर (आसमानों) तक ले जाऊँगा।

४. इस रेवायत में ख़ुदा अपनी इज़्ज़त और जलाल की क़सम खाता है और उसके बाद रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम से इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के ज़हूर के बाद के तमान हालात को बयान करता है।

और इन तमाम बातों का होना यक़ीनी है जिसमें किसी भी शक की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

५. इस रेवायत से यह भी पता चलता है कि संसार की सारी चीज़े बल्कि ज़मीन और आसमान, और उनके बीच जो कुछ भी है वह सब इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के ताबे (आज्ञाकारी) होंगे जेसै बादल, हवा, वग़ैरह वग़ैरह । और ऐसी नहीं है कि इन सारी चीज़ों से सिर्फ़ इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ ही लाभ नहीं उठाएँगे बल्कि उनके चाहने वाले भी जिस चीज़ को चाहेंगे उससे लाभ उठाएँगे। जैसे कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने जनाबे सलमान को आसमानों की सैर कराई थी और उनको ज़मीन से इतना ऊपर ले गए थे कि, ज़मीन जनाबे सलमान फ़ारसी को आखरोट के बराबर दिखाई दे रही थी। इस वाकेए से यह बात भी पता चलती है कि जनाबे सलमान फ़रसी को हज़रत अली अलैहिस्सलाम चाँद से भी दूर आसमानों में ले गए थे क्योंकि चाँद तो दुनिया से बहुत छोटा है फिर भी आखरोट की तरह नहीं बल्कि उससे बहुत बड़ा देखाइ देता है मगर ज़मीन जनाबे सलमान फ़ारसी को आखरोट के बराबर दिखाइ दे रही थी जिसका मतलब यह है कि वे ज़मीन से बहुत दूर आसमान तक गये थे।

६. हम ने जो कुछ बायन किया उससे नतीजा यह निकलता है किः इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का सांसारिक और न्यायिक राज्य ज़मीन और आसमान हर जगह होगा। क्योंकि ख़ुदा ने रेवायत में

यह बात बयान की है कि वह इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ को पूरब और पश्चिम का मालिक बनाए गा (यह एक इशारा हैः यानी पूरे ज़मीन व आसमान का मालिक बनाएगा।) और उसके बाद रेवायत में ज़हूर के बाद के सारे हालात बयान किए हैं।

७. इस रेवायत से यह भी पता चलता है कि ज़हूर के बा बरकत ज़माने में आसमानों और अंतरिक्ष में यात्रा करने के लिए ऐसी चीज़ें होंगी जिनकी रफ़्तार नूर से भी ज़्यादा होगी और वह ज़मीन व आसमान की क़ैद से आज़ाद होंगी।

आसमानी जीव से परिचय

आसमानी जीवों से परिचय, अंतरिक्ष यात्रा के माध्यम से ही होगा। क्योंकि आसमानों में भी जीवन पाया जाता है। इस बात की तरफ़ हमारे इमामों ने भी अपनी हदीसों में इशारा किया है। जैसा कि इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

قال امیر المومنین علیہ السلام: لهذه النجوم التی فی
السماء مدائن مثل المدائن التی فی الارض

हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः आसमानो में पाए जाने वाले सितारों में भी शहर हैं। जैसे ज़मीन पर शहर पाए जाते हैं।

इस रेवायत से यह साफ़ पता चलता है कि ज़मीन की तरह आसमानो में भी जीव पाए जाते हैं और ज़मीन की तरह वहाँ भी शहर आबाद हैं।(१६)

दूसरी रेवायत में अबू बसीर कहते हैं किः

سالتہ عن السماوات السبع ، فقال سبع سماوات لیس منها
سماء الا و فیها خلق ، و بینها و بین الاخریٰ خلق حتی
ینتھیٰ الی السابعۃ ؛
قلت : والارض
قال : سبع ، منھن خمس فیھن خلق من خلق الرب ،
واثنان ھواء لیس فیھما شئ

अबू बसीर कहते हैं कि मैंने इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सात आसमानों के बारे में सवाल किया तो इमाम ने फ़रमायाः

सात आसमान हैं कि जिनके बीच में कोई आसमान नहीं, मगर उस आसमान और दुसरे आसमानों के बीच में जीव पाए जाते हैं। और इस तरह यह सात आसमान होते हैं।

मैंने पूछा कि ज़मीन कैसी है ?

इमाम ने फ़रमायाः ज़मीन भी सात हैं जिनमें से पाँच पर जीव रहते हैं। और दूसरी दो ज़मीनो में हवा पायी जाती है और उसमें कोई भी नहीं रहता है।(१७)

आज दुनिया जिस चीज़ के बारे में पता करने में मरी जा रही है उन सबके बारे में हमारे इमामों और नबियों ने सैंकड़ों साल पहले इशारा कर दिया था।

ख़ुदाई शक्ति से लाभ

क़ुर्आन मजीन की आयात और इमामों की हदीसें इस बारे में इशारा करती हैं। रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम और अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने लोगों को सैंकड़ों वर्ष पहले

ऐसी चीज़ों के बारे में बता दिया था कि एक समय ऐसा आएगा कि जब सारे इंसान ख़ुदाई शक्ति से लाभ उठाएँगे। और क़ुर्आन मजीद की आयात भी इस बात को बयान करती हैं। ज़हूर का बा बरकत ज़माना ऐसी ही शक्तियों से लाभ उठाने का ज़माना है।

यह किताबे देखें।

(१)शगुफ़तहाये आफ़रीनिशः ७४
(२) अजीब तर अज़ रोयाः ३५६
(३) शगुफ़तहाए काविशे जहानः २३०
(४) दो हज़ार दानिशमंद दर जुसतुजूए ख़ुदाः १३
(५) जहान दर ५०० साल आईंदा : ४९४
(६) जहान दर ५०० साल आईंदा : ५२०
(७) निगाही बे सर नविश्ते जहान, इंसान, तारीख़ः २७
(८) गुमशुदगाने मोसल्लसे बरमूदाः १९२
(९) बुशक़ाब परिन्देः २१२

(१०) बाज़गश्त बे सितारगानः ५

(११) जहान ५०० साल आईंदा : ४२६

(१२) जहान दर ५०० साल आईंदा : २७९

(१३) मजल्लए दानिस्तहाः साल, २६ महर १३८३, न०, ३६०, पृष्ठः ४२

(१४) बेहारूल अनवारः ५०/१६५. नज़ीर दर ऑनः १७/२१०.

(१५) बेहारुल अनवारः ५२/३१२

(१६) बेहारुल अनवारः ५८/९१

(१७) बेहारुल अनवारः ५८/९७

This document was created with Win2PDF available at http://www.daneprairie.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.